Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

भारत में लिंगानुपात की स्थिति का विश्लेषण और इसके प्रावधान का अध्ययन

Kuldeep Daipuria[1]* Dr. Ratan Sinha[2]

[1] Research Scholar, Jiwaji University, Gwalior

[2] Assistant Professor, V.R.G. Girls P.G. College, Morar, Gwalior

***सार** – किसी भी देश को पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहां की महिलाओं का शिक्षित होना जरुरी है। यह एक तरह से उस दवाई की भांति है जो मरीज़ को ठीक होने में मदद करती है और उसे फिर से सेहतमंद बनने में मदद करती है। महिला शिक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा है भारत को आर्थिक रूप से तथा सामाजिक रूप से विकसित बनाने में। शिक्षित महिला उस तरह का औज़ार है जो भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर अपने हुनर तथा ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालती है। देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के पीछे शिक्षित महिला का अमूल्य योगदान होता है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि अनपढ़ महिला का जल्द ही विवाह कर दिया जाता है और वे जल्दी ही बच्चों को जन्म दे देती है। शिक्षित महिला ऐसा कदम सोच समझ कर उठा सकती है जिससे देश की बढती हुई जनसँख्या पर भी रोकथाम लगायी जा सकती है।*

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

पौराणिक काल के भारत में महिलाओं के लिए शिक्षा का उचित प्रबंध था परन्तु मध्यकालीन युग के आते आते महिलाओं पर कई तरह की पाबंदियां लगा दी गई थी। हालाँकि अगर हम आज की बात करे तो लोग महिलाओं की शिक्षा को लेकर बहुत जागरूक हो चुके है और यह अच्छी तरह समझते है कि बिना महिलाओं के शिक्षित हुए देश और समाज विकास नहीं कर सकता। यह तथ्य सत्य है की महिला और पुरुष दोनों मिल कर ही देश को हर क्षेत्र में पूर्ण रूप से विकसित कर सकते है।

महिलाओं को भी पुरुषों की तरह शिक्षा संबंधी गतिविधियों में बराबरी का मौका दिया जाना चाहिए। उन्हें शिक्षा से जुडी किसी भी तरह की कार्यवाही से दूर रखना क्रूरता के समान है। हमारे देश की आधी जनसँख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है। अगर महिलाएं अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पायी तो इसका मतलब है की हमारे देश का विकास भी अधूरा है जो देश को पिछड़ेपन की ओर ले जायेगा। महिलाओं के शिक्षित होने से समाज और देश में विकास भी तेज़ी से हो पायेगा। महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व को व्यापक स्तर पर फ़ैलाने के लिए पूरे देश में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। एक शिक्षित महिला ही अपने परिवार का तथा देश का विकास कर सकती है।

भूमिका

महिला शिक्षा की दर कम होने की ही वजह से जनसंख्या के मामले में हमारा देश पूरे विश्व में दूसरे नंबर पर आता है। अगर महिला खुद शिक्षित होगी तो देश का आने वाला भविष्य भी शिक्षित होगा। महिला शिक्षा मध्यकालीन भारत में बहुत बड़ा मुद्दा था हालाँकि आज यह मसला काफी हद तक सुलझ चुका है। भारत में अब महिला शिक्षा को पुरुषों की शिक्षा की ही तरह अहमियत दी जाती है ताकि महिलाएं भी सामाजिक और आर्थिक स्तर पर सकारात्मक बदलाव ला सकें। पुराने ज़माने में महिलाओं को घर से बाहर निकलने की इजाज़त नहीं थी। शिक्षा के नाम पर वे सिर्फ घरेलू कामकाज़ो तक ही सीमित थी।

राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर कुछ ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान महिलाओं के विकास के लिए काफी सराहनीय कार्य किया था। महिला तथा पुरुष दोनों मिल कर देश की आधी आधी जनसँख्या का प्रतिनिधित्व करते है। वे एक सिक्के के दो पहलू के समान है तो इस हिसाब से महिला तथा पुरुष दोनों ही देश के विकास में बराबरी के हक़दार है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि आने वाले वंश की जन्मदाता वे ही है। अगर महिलाएं अच्छी तरह से शिक्षित होंगी तो ही वे

भविष्य में जन्मलेने वाली पीढ़ी को शिक्षा दे पाएंगी जिससे समाज और देश प्रगति कर पाएगा।

भारतीय समाज के सही आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी शिक्षा बेहद ज़रूरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तरह से साइकिल का संतुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुष और महिला के कन्धों पर आश्रित है। दोनों ही देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का हक़ मिलना जरुरी है। अगर इन दोनों में से किसी भी एक की शिक्षा का स्तर गिरा तो समाज की प्रगति होना नामुमकिन है।

भारत की उन्नति के लिए महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरुरी है क्योंकि अपने बच्चों की पहली शिक्षक माँ ही होती है जो उन्हें जीवन की अच्छाईयों और बुराइयों से अवगत कराती है। अगर नारी शिक्षा को नजरंदाज़ किया गया तो देश के भविष्य के लिए यह किसी खतरे से कम नहीं होगा। एक अनपढ़ महिला में वो काबिलियत नहीं होती जिससे वह अपने परिवार, बच्चों का सही ख्याल रख सके। इस कारण आने वाली पीढ़ी कमज़ोर हो जाएगी। हम महिला साक्षरता के सारे लाभ की गिनती तो नहीं कर सकते पर इतना जरुर कह सकते है की एक शिक्षित महिला अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को अच्छे से निभा सकती है, उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान दे सकती है, सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करके देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकती है।

एक पुरुष को शिक्षित करके हम सिर्फ एक ही व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचा पाएंगे पर एक महिला को शिक्षित करके हम पूरे देश तक शिक्षा को पहुँचा पाएंगे। महिला साक्षरता की कमी देश को कमज़ोर बनाती है। इसलिए यह बहुत जरुरी है कि महिलाओं को उनकी शिक्षा का हक़ दिया जाए और उन्हें किसी भी तरह से पुरुषों से कम न समझा जाए।

आज के समय में भारत महिला साक्षरता के मामले में लगातार प्रगति कर रहा है। हिंदुस्तान के इतिहास में भी बहादुर महिलाओं जिक्र किया गया है। मीराबाई, दुर्गावती, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई जैसी कुछ मशहूर महिलाओं के साथ-साथ वेदों के समय की महिला दर्शनशास्त्री गार्गी, विस्वबरा, मैत्रयी आदि का भी उदाहरण इतिहास का पन्नो में दर्ज है। ये सब महिलाएं प्रेरणा का स्रोत थी। समाज और देश के लिए दिए गये उनके योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते।

भारत में लिंगानुपात की स्थिति का विश्लेषण

भारत में महिला साक्षरता नए ज़माने की अहम जरुरत है। महिलाओं के शिक्षित हुए बिना हम देश के उज्जवल भविष्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। परिवार, समाज और देश की उन्नति में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। भारत के लोकतंत्र को सफल बनाने का एकमात्र रास्ता यहीं है की महिलाओं तथा पुरुषों को शिक्षा हासिल करने के लिए बराबरी का हक़ दिया जाए। शिक्षित महिलाएं ही देश, समाज और परिवार में खुशहाली ला सकती है। यह कथन बिलकुल सत्य है की एक आदमी सिर्फ एक व्यक्ति को ही शिक्षित कर सकता पर एक महिला पूरे समाज को शिक्षित कर सकती है जिससे पूरे देश को शिक्षित किया जा सकता है।

आज महिला शिक्षा के महत्व को पहचानना बहुत आवश्यक है क्योंकि वे अपने बच्चो की पहली शिक्षक है जो आगे जाकर देश के निर्माण को एक नई पहचान देंगे। किसी भी बच्चे का भविष्य उसकी माँ द्वारा दिए प्यार और परवरिश पर निर्भर करता है जो एक महिला ही कर सकती है। हर बच्चा अपनी ज़िन्दगी की पहली सीख अपनी माँ से ही हासिल करता है। इसलिए माँ का शिक्षित होना बेहद जरुरी है जिससे वह अपने बच्चे में वे गुण डाल सके जो उसके जीवन को सही दिशा दे सके। शिक्षित महिलाएं सिर्फ अपने बच्चे ही नहीं बल्कि उनके आसपास और कई लोगों की जिंदगी को बदल सकती है जो देश को विकसित करने में महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकते है।

एक महिला अपने जीवन में माँ, बेटी, बहन, पत्नी जैसे कई रिश्तों को निभाती है। किसी भी रिश्ते में बंधने से पहले वह महिला देश की आजाद नागरिक है तथा वह उन सब अधिकारों की हक़दार है जो पुरुषों को मिले हुए हैं। उन्हें अपनी इच्छा अनुसार शिक्षा ग्रहण करने का हक़ है जिससे वे अपने मनपसंद क्षेत्र में कार्य कर सके। महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा करने तथा आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा सहायता करती है। शिक्षा न सिर्फ महिलाओं का समाज में स्तर ऊँचा करती है बल्कि महिलाओं के प्रति समाज की उस संकीर्ण सोच, जिसमे उन्हें माँ-बाप पर बोझ की तरह देखा जाता था, को भी खत्म करती है।

शिक्षा महिलाओं को पुरुषों की भांति समाज और देश को प्रगति के पथ पर ले जाने के कर्तव्य से भी अवगत कराती है।

पौराणिक युग से लेकर आजादी के बाद के समय तक महिला साक्षरता को लेकर किये गये प्रयासों में बहुत प्रगति हुई है।

हालाँकि अभी यह कार्य संतुष्टि के स्तर तक नहीं पहुँचा है। अभी भी इस दिशा में काफी काम करना बाकी है। भारत के विश्व में बाकी देशों से पिछड़ने के पीछे महिला साक्षरता की कमी का ही होना है। भारत में महिला साक्षरता को लेकर गंभीरता इसलिए कम है क्योंकि बहुत पहले समाज में महिलाओं पर तरह-तरह की पाबंदियां थोप दी गई थी। इन पाबंदियों का जल्द ही हटाना बेहद जरुरी है। इन प्रतिबंधों को हटाने के लिए हमें महिला शिक्षा को लेकर व्यापक स्तर पर जागरूकता फैलानी होगी और महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति प्रेरित करना होगा जिससे वे आगे आकर समाज और देश को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके।

शहरी तथा ग्रामीण इलाकों में महिला शिक्षा का स्तर काफी बढ़ा है। हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए अलग से विशेष योजनायें चलाई गयी है। गावों में महिलाओं को शिक्षित करने के साथ–साथ उनके लिए रोज़गार संबंधी अवसर भी बढ़ाये जाने चाहिए जिससे वे अच्छी आमदनी अर्जित कर अपने परिवार का सही गुज़ारा कर सके।

भारत में लड़कियों की शिक्षा देश की वृद्धि के लिए काफी हद तक आवश्यक है क्योंकि लड़कियां लड़कों की तुलना में बेहतर काम कर सकती हैं। आजकल लड़कियों की शिक्षा जरूरी है और यह अनिवार्य भी है क्योंकि महिलाएं देश का भविष्य हैं। भारत को सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित करने के लिए लड़कियों की शिक्षा आवश्यक है। शिक्षित महिलाओं ने पेशेवर क्षेत्रों जैसे चिकित्सा, रक्षा सेवाओं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपने योगदान से भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। महिलाएं व्यवसाय अच्छे तरीके से करती हैं और अपने घर और कार्यालय को संभालना अच्छी तरह से जानती हैं। बेहतर अर्थव्यवस्था और बेहतर समाज लड़कियों की शिक्षा का ही नतीजा है। शिक्षित महिलाएं अशिक्षित महिलाओं की तुलना में सही समय पर या बाद में शादी करके देश की आबादी को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं।

प्रारंभिक भारतीय समाज में लड़कियों की शिक्षा काफी अच्छी थी लेकिन मध्य युग में महिलाओं के लिए कई सीमाओं की वजह से इतनी अच्छी नहीं थी। हालांकि इसके बाद यह दिन-प्रतिदिन और बेहतर होती गई क्योंकि भारत में लोगों ने इस तथ्य को समझ लिया है कि महिलाओं के विकास और प्रगति के बिना देश का विकास संभव नहीं है। यह सच है कि दोनों लिंगों के समकक्ष विस्तार से देश को हर क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक विकास हासिल करने में बढ़ावा मिलेगा।

निष्कर्ष

लड़कियों की शिक्षा में कई फायदे हैं। एक सुशिक्षित और सुशोभित लड़की देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। एक शिक्षित लड़की विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के काम और बोझ को साझा कर सकती है। एक शिक्षित लड़की की अगर कम उम्र में शादी नहीं की गई तो वह लेखक, शिक्षक, वकील, डॉक्टर और वैज्ञानिक के रूप में देश की सेवा कर सकती हैं। इसके अलावा वह अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शन कर सकती है।

आर्थिक संकट के इस युग में लड़कियों के लिए शिक्षा एक वरदान है। आज के समय में एक मध्यवर्गीय परिवार की जरूरतों को पूरा करना वास्तव में कठिन है। शादी के बाद अगर एक शिक्षित लड़की काम करती है तो वह अपने पति के साथ परिवार के खर्चों को पूरा करने में मदद कर सकती है। अगर किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती है तो वह काम करके पैसा कमा सकती है।

शिक्षा महिलाओं के सोच के दायरे को भी बढ़ाती है जिससे वह अपने बच्चों की परवरिश अच्छे से कर सकती है। इससे वह यह भी तय कर सकती है कि उसके और उसके परिवार के लिए क्या सबसे अच्छा है।

शिक्षा एक लड़की को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में मदद करती है ताकि वह अपने अधिकारों और महिलाओं के सशक्तिकरण को पहचान सके जिससे उसे लिंग असमानता की समस्या से लड़ने में मदद मिले।

सन्दर्भ

1. बेस्ट, जॉन डब्लू. (1954) रिसर्च इन एज्युकेशन. नई दिल्लीः प्रेन्टिस हाल इन इण्डिया प्रा. लि.

2. बी, राममोहन. बाबू. (2015). विद्यालयों के प्रकार और अध्यापकों के लिंग के संबंध में विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन. पर्सपेक्चर इन एज्युकेशन वोल्यूम 12(3), पृ. 159-163.

3. बडगुर्जर प्रेमकंवर (2012): राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू (राज.) प्रकाशित शोध प्रबंध, छवि नेशनल

जर्नल ऑफ़ हायर एज्युकेशन, वर्ष-दो, निर्गमन-दो, जनवरी-मार्च 214 पेज 19-21.

4. बोहरा, लक्ष्मीधर (2006) प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में विचार करने की योग्यता (विचारशक्ति) को बढ़ानाः पर्यावरणीय अध्ययन एक मार्ग के रूप में. प्राथमिक शिक्षक वोल्यूमxx टप् (3) 25-3.

5. बी, एकामर्बज. (2013). स्कूल के वातावरण को प्रभावित करने वाले प्रयोगों का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. रायल विश्वविद्यालय, भूटान.

6. दास, आर. (2017). माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों के निर्देशात्मक प्रंबधन व्यवहार और विद्यालयों के कार्य और संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध.कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र.

7. दीवान, रश्मि. (2016) विद्यालय के प्रधानाध्यापकों में नायकत्व व्यवहार और मूल्य निर्माण (आदर्श) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली.

8. देसाई, आर. (2016). विद्यार्थियों के विकास के संबंध में कक्षा के वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर.

9. दयाल, रामेश्वर. (2017). एक सामाजिक स्तरीय अध्ययन का संबंध अकादमिक के सामाजिक अवधारणा और एयरमेन के विशेष सन्दर्भ में, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

10. दत्या, डी. (2016) अध्यापकों की शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यता स्तर का कक्षाकक्ष वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. उत्कल विश्वविद्यालय, भुनेश्वर.

11. दास, एम. ए. (2017). माध्यमिक स्कूल के प्रशासनिक व्यवहार के नियमों में चुनी हुई अस्थिरताओं का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर.

Corresponding Author

Kuldeep Daipuria*

Research Scholar, Jiwaji University, Gwalior